श्रीगुरु-वचन

तुम अपने खुद के सबसे अच्छे मित्र बनो।

समय का निर्माण करो
जब तुम जागरूकता से मौन का पालन कर सको
ताकि तुम्हारे शरीर को और तुम्हारी आत्मा को
विश्राम मिले।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

***

तुम अपने खुद के सबसे अच्छे मित्र बनो।

समय निकालो जब तुम अपनी दिव्यता का चिन्तन कर सको
और इस बात को हृदयंगम कर सको
कि तुम्हारे ऊपर भगवान का आशीर्वाद है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

***

तुम अपने खुद के सबसे अच्छे मित्र बनो।

प्रयत्नपूर्वक समय की रचना करो जब तुम ध्यान कर सको
और ज्ञान-सरोवर को अन्तर में पा सको
जो आत्मा का शाश्वत ज्ञान है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

***

तुम अपने खुद के सबसे अच्छे मित्र बनो।

अपने समय की प्राथमिकताओं को इस प्रकार निर्धारित करो
कि बाह्य संसार की इस या उस चीज़ की लालसा में
क्षणांश भी गँवाए बिना
तुम अपने जीवन के उद्देश्य को पूर्ण कर सको।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

***

तुम अपने खुद के सबसे अच्छे मित्र बनो।

अपने समय की रूपरेखा इस तरह बनाओ कि
तुम अपने पावन वातावरण में व्याप्त
झिलमिलाती चिति को अपने श्वास में भर लो,
और अपने अभ्यासों से अर्जित सत्कर्मों को
प्रश्वास के साथ बाहर प्रवाहित होने दो।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

***

तुम अपने खुद के सबसे अच्छे मित्र बनो।

समय का नियोजन इस प्रकार करो कि
श्रीगुरु से जुड़ी अपनी अनुभूतियों को तुम
अपने हृदय-मन्दिर में प्रतिष्ठित कर सको।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

***

तुम अपने खुद के सबसे अच्छे मित्र बनो।

अलग से समय निकालो
ताकि तुम अपनी पूर्वकल्पित सीमितताओं को त्याग सको
और इसके स्थान पर अपने प्रयत्नों की भव्यता का एवं
कृपा की रहस्यमयी लीलाओं का उत्सव मना सको।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

***

तुम अपने खुद के सबसे अच्छे मित्र बनो।

समय का इस तरह उपयोग करो कि तुम वे कार्य सम्पन्न कर सको
जिन्हें करने का तुमने अपने आपसे वायदा किया है
जिससे, फिर तुम आराम से बैठकर
अपने उद्यमों में नियति के हाथ की सराहना करो।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

***

तुम अपने खुद के सबसे अच्छे मित्र बनो।

तत्क्षण सँभलना सीखो—स्वाभाविकता से, तत्परता से—
ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे चेहरे पर तब मुस्कान खिल उठती है
जब तुम्हारा हृदय प्रशान्त होता है और
श्रीगुरु के प्रेम से ओतप्रोत होता है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

***

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।